संस्कृत

कक्षा 6 – 8

भूमिका

संस्कृत विश्व की एक प्राचीनतम भाषा है। इसका साहित्य ऋग्वेद–काल से लेकर आज तक अबाध गति से प्रवाहित होता आ रहा है। ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में जितने ग्रन्थ इस भाषा में लिखे गए हैं उतने अन्य किसी भी प्राचीन भाषा में प्राप्त नहीं होते। अधिकांश भारतीय भाषाओं में संस्कृत शब्दों की बहुलता है। अतः संस्कृत भाषा का ज्ञान अन्य भारतीय भाषाओं के सीखने में सहायक सिद्ध होता है। यह भारतीय भाषाओं के ज्ञान का सम्बर्धन एवं संपोषण करती है। संस्कृत भाषा और साहित्य का राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से भी बहुत महत्व है। संस्कृत साहित्य की मूल चेतना, विविधता को बनाए रखते हुए भारत को एक राष्ट्र के रूप में देखने की है। भारतवर्ष में क्षेत्रीय विषमताओं के होने पर भी जिन तत्वों ने इस देश को एक सूत्र में बाँध रखा है उनमें संस्कृत भाषा तथा इसका साहित्य प्रमुख है। संस्कृत साहित्य ने उत्तर–दक्षिण या पूर्व–पश्चिम का भेदभाव मिटाकर प्रत्येक नागरिक को भारतीय होने का स्वाभिमान प्रदान किया है। इस भाषा में भारतीय संस्कृति, सभ्यता, धर्म, दर्शन, इतिहास, पुराण, भूगोल, राजनीति एवं विज्ञान का प्रचुर साहित्य तथा प्रत्येक विधा में समकालीन साहित्य उपलब्ध है जिसका अनुशीलन आज भी समाज के लिए परम उपयोगी है। मानवीय मूल्यों एवं विश्वबन्धुत्व की भावना के विकास में संस्कृत का महत्व अद्वितीय है।

संस्कृत को केवल एक प्राचीन भाषा मानना ही पर्याप्त नहीं है। आधुनिक संस्कृत अन्य भाषाओं की तरह भारतीय बहुभाषिकता की एक अभिन्न अंग भी है। जिस प्रकार संस्कृत अन्य भाषाओं के सीखने व बौद्धिक विकास में एक बहुभाषी कक्षा में सहायक सिद्ध होती है, ठीक उसी प्रकार संस्कृत सीखने में कक्षा में सहज उपलब्ध बहुभाषिकता का उपयोग किया जा सकता है। बहुभाषिकता के प्रति आदर एक ऐसा सशक्त दृष्टिकोण है, जिससे भाषा–शिक्षण की पूरी विधि ही बदल सकती है।

श्रवण, भाषण, पठन एवं लेखन भाषा–कौशलों का विकास पाठों पर ही आधारित होगा। यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों के लिए पाठ समग्र रूप में सार्थक हो, जिससे भाषा के सभी तत्व सहज ग्राह्य हो जायेंगे।

इसी दृष्टिकोण से उच्च प्राथमिक स्तर पर (कक्षा 6 से 8 तक) संस्कृत के पठन–पाठन के लिए पाठ्यक्रम विकसित किया गया है।

सामान्य उद्देश्य

माध्यमिक कक्षा 6, 7, 8 के स्तर पर संस्कृत भाषा के अध्ययन अध्यापन के निम्नलिखित सामान्य उद्देश्य हो सकते हैं–

- विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा का प्राथमिक ज्ञान कराना।
- बोधपूर्वक संस्कृत सुनने, बोलने, पढ़ने तथा लिखने की क्षमता प्रदान करना।
- संस्कृत भाषा एवं साहित्य के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना।
- विद्यार्थियों को नैतिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों को विकसित करने हेतु प्रेरित करना।
- मातृभाषा में प्रयुक्त संस्कृत शब्दों की पहचान करना।

fof'k"V mís';

उच्च प्राथमिक स्तर पर निम्नलिखित विशिष्ट उद्देश्य निर्धारित किए जा सकते हैं–

- संस्कृत की ध्वनियों (वर्ण,पद) का शुद्ध उच्चारण करने की योग्यता उत्पन्न करना।
- संस्कृत में सरल वाक्य समझने एवं बोलने की क्षमता विकसित करना।
- अर्थबोध के साथ संस्कृत गद्यांश को पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- संस्कृत श्लोकों को स्मरण कर सस्वर वाचन की योग्यता उत्पन्न करना।
- संस्कृत में सरल वाक्य लिखने की क्षमता विकसित करना।
- संस्कृत भाषा एवं साहित्य के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करना।
- कविता की लय का बोध एवं सराहने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थियों में सौन्दर्यबोध, कल्पनाशीलता तथा चिन्तन की क्षमता का विकास करना।

LrjkUr ;kX;rk,¡ ¼d{kk&6½

I. dk'kyijd ;kX;rk,¡&

¼d½ *Jo.k*

विद्यार्थी संस्कृत की विशिष्ट ध्वनियों को सुनकर पहचान सकेगा।
अकारान्त पद (राम)।
विसर्ग ध्वनि (रामः, हरिः)।
ऋ, रेफ तथा र से बनने वाले शब्द कृमि, कर्म, क्रम।
अनुनासिक एवं अनुस्वार की ध्वनियाँ–सङ्गीत, संस्कार।
संयुक्ताक्षर – द्य, द्ध, द्व, ह्न, ह्ल, ह्ल, ह्व, क्ष, त्र, ज्ञ, स्र, स्त्र आदि।
संयुक्त वर्ण से पूर्व वर्ण के ऊपर बलाघात आदि।
ऊष्म ध्वनियाँ – श,ष,स,ह।
संस्कृत के सरल वाक्यों को सुनकर विघार्थी अर्थ समझ सकेगा तथा उनका प्रयोग कर सकेगा।

¼[k½ *Hkk"k.k*

संस्कृत के पदों का शुद्ध उच्चारण कर सकेगा।
पाठ्यपुस्तकों में आए सुभाषितों को कण्ठस्थ करके सुना सकेगा।
संस्कृत में छोटे–छोटे सरल प्रश्नों के उत्तर दे सकेगा।

¼x½ *okpu ¼iBu½*

सरल संस्कृत गद्यांश का शुद्ध वाचन कर सकेगा।
पाठ्यपुस्तक में आए सुभाषितों का शुद्ध वाचन कर सकेगा।
सरल संस्कृत वाक्यों को पढ़कर अर्थ समझ सकेगा तथा उन पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दे सकेगा।

¼?k½ *y[ku*

पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त शब्दों को शुद्ध वर्तनी में लिख सकेगा।
सरल संस्कृत वाक्यों को सुनकर शुद्ध रूप से लिख सकेगा।

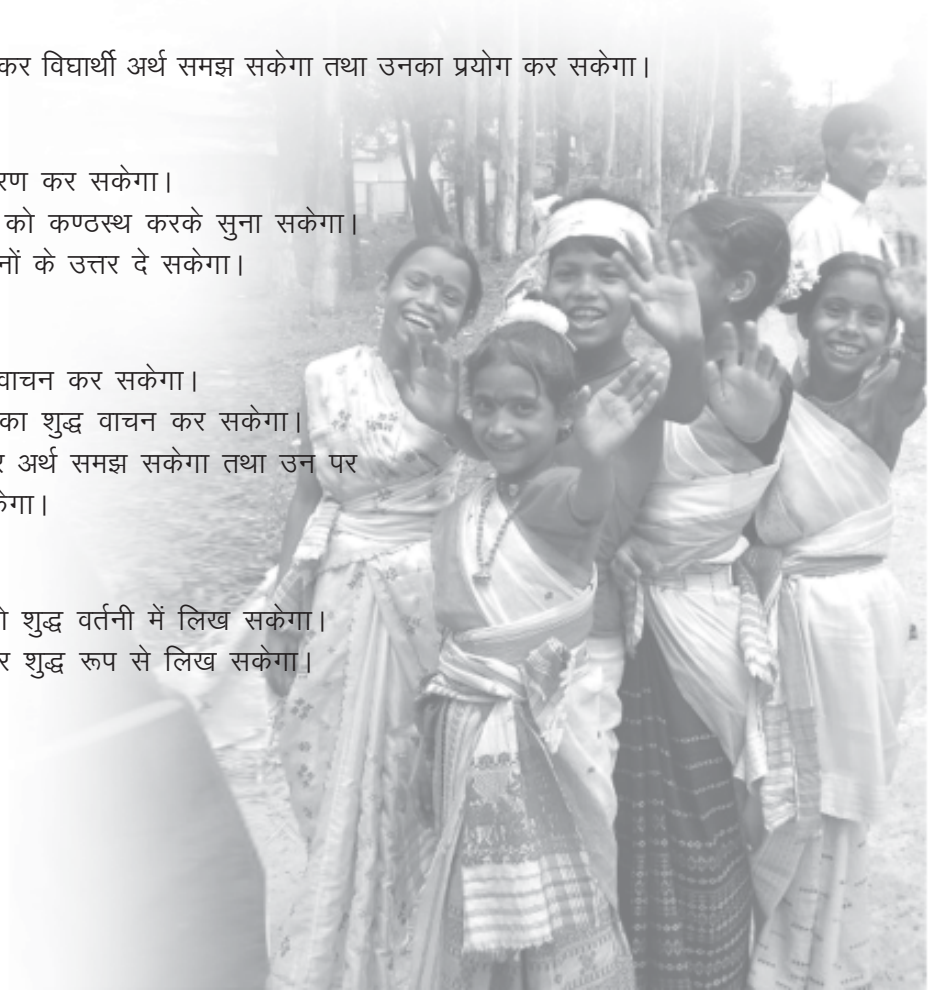

II. Hkkf"kdrRo {kerk

संस्कृत वाक्य में प्रयुक्त नाम पद (संज्ञा, सर्वनाम) के साथ क्रियापदों का सही अन्वय कर सकेगा।
वाक्य में विशेष्य के साथ सही विशेषण का अन्वय कर सकेगा।
संस्कृत में छोटे वाक्यों का निर्माण कर सकेगा।
संस्कृत में सरल प्रश्न पूछ सकेगा तथा उनके उत्तर भी दे सकेगा।

d{kk&7

I. dk'kyijd ;kX;rk,¡&

¼d½ Jo.k

संस्कृत के सरल गद्यांशों एवं पद्यों को सुनकर अर्थ समझ सकेगा।
कक्षा में सहपाठियों एवं अध्यापक के संस्कृत कथनों को सुनकर तदनुरूप कार्य कर सकेगा।

¼[k½ Hkk"k.k

संस्कृत में सरल प्रश्नोत्तर कर सकेगा।

¼x½ okpu ¼iBu½

संस्कृत के गद्य एवं लघुकथाओं का शुद्ध वाचन कर सकेगा।
संस्कृत पद्यों का उचित लय के साथ पाठ कर सकेगा।

¼?k½ y[ku

पठित सामग्री पर संस्कृत में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिख सकेगा।
चित्रों के आधार पर सरल संस्कृत वाक्य बना सकेगा।

II. Hkkf"kdrRo {kerk

पठित विषय पर संस्कृत में पाँच वाक्य लिख सकेगा।
संज्ञापद एवं क्रियापद में वचन परिवर्तन कर सकेगा।

d{kk&8

I. dk'kyijd ;kX;rk,¡&

कक्षा 6, 7 तक की अपेक्षित योग्यताओं के अतिरिक्त निम्नलिखित योग्यताएँ अपेक्षित हैं –

¼d½ Jo.k

अपने सहपाठियों एवं अध्यापक द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दे सकेगा।
लघु नाट्यांशों एवं कथाओं को सुनकर भाव ग्रहण कर सकेगा।

¼[k½ Hkk"k.k

पाठ्यपुस्तक के पठित अंश पर दिए गए सरल प्रश्नों का उत्तर संस्कृत में दे सकेगा।
अपने सहपाठियों से छोटे एवं सरल प्रश्न संस्कृत में पूछ सकेगा।

संस्कृत की सरल लघु कथाओं का सारांश सरल संस्कृत में सुना सकेगा।
छोटे-छोटे संस्कृत संवादों का अभिनय कर सकेगा।

¼x½ okpu ¼iBu½

उचित गति एवं शुद्ध उच्चारण सहित संस्कृत गद्यांशों का वाचन कर सकेगा।
उचित लय एवं गति के साथ निर्धारित श्लोकों का सस्वर वाचन कर सकेगा।

¼?k½ y[ku

दिए गए संकेतों के आधार पर अनुच्छेद/लघुकथा लिख सकेगा।
कण्ठस्थ की हुई सूक्तियों/सुभाषितों को लिख सकेगा।
कथानक या घटना के आधार पर दिए गए वाक्यों को सही क्रम से लिख सकेगा।

II. Hkkf"kdrRo {kerk

संज्ञा, विशेषण शब्दों के साथ विभक्तियों का प्रयोग कर सकेगा।
संज्ञा, विशेषण, अव्यय आदि का प्रयोग करते हुए वाक्य–रचना कर सकेगा।
वाक्य के अन्तर्गत कर्तृपद के अनुसार पाँच लकारों में क्रिया का प्रयोग कर सकेगा।
संधि से युक्त पदों का संधिविच्छेद कर सकेगा।
धातुओं के साथ पूर्वकालिक क्त्वा/ल्यप् प्रत्यय लगाकर दो वाक्यों को जोड़ सकेगा।

ikB; lkexh

कक्षा 6, 7 तथा 8 के लिए निम्नलिखित पाठ्यसामग्री होगी–

ikB;iLrd

कक्षा 6, 7 तथा 8 के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित एक–एक पाठ्यपुस्तक होगी, जिसमें 15–15 पाठ होंगे। इनमें 9 गद्यपाठ एवं 6 पद्यपाठ हो सकते हैं।

vH;kl iqfLrdk

प्रायोगिक व्याकरण के अभ्यास हेतु प्रत्येक कक्षा के लिए एक–एक अभ्यास पुस्तिका का निर्माण किया जा सकता है।

ikB; fo"k;

पाठ्यपुस्तकों की पाठ्यसामग्री को विकसित करने के लिए शरीर के अंग, फलों के नाम, घर, परिवार, पाठशाला, खेल, हमारा देश, जीवनोपयोगी रोचक कथाएँ, प्राकृतिक वातावरण, राष्ट्रीय पर्व, सामाजिक त्यौहार, स्वतन्त्रता सेनानियों महापुरुषों आदर्श–नारियों के जीवन, संस्मरण, भारतीय दिनों, महीनों, ऋतुओं, दिशाओं आदि के नाम आदि विषयों को आधार बनाया जा सकता है।
प्रत्येक पाठ्यपुस्तक में लगभग 20 प्रतिशत अंश अन्य भाषाओं के साहित्य का संस्कृत अनुवाद तथा 30 प्रतिशत नवीन मौलिक साहित्य का समावेश किया जाना चाहिए।

- विद्यार्थियों में सत्य, समता, बड़ों का आदर, क्षमा, धैर्य, त्याग, परोपकार, स्वावलम्बन, आत्मविश्वास, कर्त्तव्यनिष्ठा, सहिष्णुता, अपरिग्रह, राष्ट्रीय एकता, विश्वबन्धुत्व, सांस्कृतिक एकता तथा सर्वधर्मसमभाव आदि जीवनमूल्यों को विकसित करने की दृष्टि से पाठ्यसामग्री का चयन तथा निर्माण किया जाना चाहिए।

- पाठ्यपुस्तक में चित्र–पाठ, संवाद पाठ, पहेलियाँ, चुटकलों के संकलन आदि सम्मिलित किए जा सकते हैं साथ ही सुभाषित, नीतिविषयक श्लोक एवं बालगीत आदि भी संकलित किये जा सकते हैं।
- पाठों के अन्त में कौशल विकासपरक एवं भाषिकतत्त्व विकासपरक अभ्यास अपेक्षित हैं।
- अभ्यासपुस्तिका में अधिकाधिक चित्रों का समावेश करते हुए प्रायोगिक व्याकरण पर आधारित प्रश्नोत्तर दिए जा सकते हैं।

d{kk&6

vuiz;qDr 0;kdj.k

lKk

अकारान्त पुँल्लिङ्ग	–	नृप, बालक आदि।
आकारान्त स्त्रीलिङ्ग	–	लता, बालिका आदि।
अकारान्त नपुंसकलिङ्ग	–	पुस्तक, पुष्प आदि।
इकारान्त नपुंसकलिङ्ग	–	मुनि, छवि आदि।
उकारान्त पुँल्लिङ्ग	–	साधु, भानु आदि।

loZuke

निम्नलिखित शब्दों का परिचय एवं प्रयोग
अहम्, वयम्, माम्, अस्मान्, मम, अस्माकम्,
त्वम्, यूयम्, त्वाम्, युष्मान्, तव, युष्माकम्, कः,
के, का, काः, किम्, कानि, सः, ते, सा, ताः, तद्,
तानि, एषः, एते, एषा, एताः, एतद्, एतानि।

fo'ks"k.k

संख्यावाची	–	1 से 20 तक
क्रमवाचक पूरणी	–	प्रथम से दशम तक पुँल्लिङ्ग में।
गुणवाची	–	अकारान्त और आकारान्त

dkjd

कारक–विभक्तियों का सामान्य प्रयोग।

fØ;k

लट् (वर्तमान) लृट् (भविष्यत) तीनों पुरूष, तीनों वचनों में।

/kkrq

पठ्, हस्, चल्, खेल्, खाद्, पा (पिब्) गम् (गच्छ), दृश् (पश्य), धाव्, पत्, भ्रम्, स्था (तिष्ठ), नी (नय्), लिख्, इष् (इच्छ), मिल् चिन्त् केवल परस्मैपदी।

v0;;

यत्र, तत्र, कुत्र, अत्र, सर्वत्र, अन्यत्र, यदा, तदा, एकदा, सदा, सर्वदा, च, अपि, अद्य, श्वः, ह्यः, प्रातः, सायम्, अहर्निशम्, अधुना, एव, कुतः।

d{kk&7

vui;Dr 0;kdj.k

lKk

ऋकारान्त पुँल्लिङ्ग — पितृ, कर्तृ।
इकारान्त स्त्रीलिङ्ग — मति, गति।
ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग — नदी, भगिनी।
इकारान्त व उकारान्त नपुंसकलिङ्ग — वारि, मधु।

lo/uke

तत्, एतत् शब्द के तीनों लिङ्गों में सभी विभक्तियों में (रूप परिचय) प्रायोगिक विधियों के माध्यम से।

fo'k"k.k

संख्यावाची — 21 से 50 तक
क्रमवाचक पूरणी — प्रथम से दशम तक तीनों लिङ्गों में सभी विभक्तियों में प्रायोगिक ज्ञान।

dkjd

कारकों का सामान्य परिचय।
उभयतः, परितः, सर्वतः, नमः, उपरि इन पदों के साथ उपयुक्त उपपद विभक्ति का प्रयोग।

fØ;k

लङ् (भूत) लकार।
पूर्वपठित धातुओं के अतिरिक्त कृ, चर्, वस्, रक्ष्, पूज्।
स्म का प्रयोग–भूतकाल का अर्थ सूचित करने के लिए लट् लकार क्रिया पद के प्रथम पुरुष के साथ स्म का प्रयोग।

v0;;

अलम्, अन्तः, बहिः, अधः, उपरि, उच्चैः, नीचैः, कदापि, पुनः।

d{kk&8

vui;Dr 0;kdj.k

lKk

ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग — मातृ, स्वसृ आदि ।
हलन्त पुँल्लिङ्ग — राजन् ।

lo/uke

अस्मद्, युष्मद्, तत्, एतत्, यत्, किम्, इदम्, सर्व के सभी रूपों का प्रायोगिक ज्ञान कराना।

fo'k"k.k

संख्यावाची — 51 से 100 तक

x.kokph

संज्ञा के अनुसार उपयुक्त विशेषण के प्रयोग की क्षमता।

dkjd

पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त कारक एवं उपपद विभक्तियों के अन्तर को समझना एवं उनके प्रयोग की क्षमता।

fØ;k

लोट् और विधिलिङ्ग का प्रायोगिक ज्ञान।

milx

प्रमुख उपसर्गों के प्रयोग का समुचित ज्ञान जैसे–गच्छति, आगच्छति।

iR;;

क्त्वा, ल्यप्, तुमुन् के योग से वाक्य संयोजन।

v0;;

पूर्व पठित अव्ययों के अतिरिक्त यावत्–तावत्, यद्यपि, तथापि, तर्हि, परन्तु, प्रायः, सहसा, दूरम्, निकटे, मिथ्या, क्रमशः अग्रे, अग्रतः का प्रायोगिक ज्ञान।

lfU/k

स्वर सन्धि का सामान्य ज्ञान।

f'k{k.k&fof/k ,oa rduhd

संस्कृत शिक्षण को सुगम, रोचक एवं छात्रकेन्द्रित बनाने के लिए अध्यापक यथासंभव संस्कृत माध्यम से संस्कृत शिक्षण करें एवं आवश्यकतानुसार प्रश्नोत्तर विधि, अभिनय विधि से अध्यापन करें, जिससे विद्यार्थी अधिक से अधिक सक्रिय होकर मौखिक रूप से व्यवहार कर सके। विद्यार्थियों के परिवेश एवं मातृभाषा ज्ञान का संस्कृत शिक्षण में यथासम्भव नियोजन किया जाय।

- इस स्तर पर संस्कृत शिक्षण को प्रभावी एवं रोचक बनाने के लिए अध्यापक छात्रकेन्द्रित एवं क्रियापरक विधि को अपनाएगा जिससे विद्यार्थियों में स्तरानुरूप भाषा–कौशलों, श्रवण, वाचन, पठन एवं लेखन का विकास हो सके।
- अध्यापकों द्वारा यथासंभव संस्कृत भाषा के मौखिक व्यवहार द्वारा विद्यार्थियों में संस्कृत बोलने की प्रवृत्ति को विकसित करना अपेक्षित है।
- अध्यापक संस्कृत के पद्यपाठों का सस्वर पाठ करें तथा विद्यार्थियों द्वारा अनुवाचन कराएँ।
- अध्यापक संस्कृत के गद्यपाठों का शुद्ध पाठ करें तथा विद्यार्थियों से अनुवाचन कराएँ विशेषतः संस्कृत की विशिष्ट ध्वनियों जैसे श, ष, स एवं संयुक्ताक्षर को आवश्यक रूप से पढ़कर बताएँ एवं विद्यार्थियों से वैसा ही करने को कहें।
- निर्धारित व्याकरण पक्ष को सैद्धान्तिक रूप से न पढ़ाकर प्रायोगिक रूप से ज्ञान करवाएँ ताकि उनके प्रयोग में विद्यार्थी दक्ष हो सके।

d{kk fØ;k dyki

- यथासंभव संस्कृत माध्यम से आदेश–निर्देश परक वाक्यों का प्रयोग करना।
- कक्षा में मौखिक प्रश्नोत्तर पर बल देना।
- प्रत्येक विद्यार्थी को संस्कृत में बोलने के लिए प्रोत्साहित करना।
- श्रवण एवं भाषण कौशल के विकास हेतु विविध क्रीड़ापरक गतिविधियों का आयोजन करना।

- भित्तिपत्रिका के माध्यम से संस्कृत के रचनात्मक लेखन को बल देना।
- संस्कृत अनुलेख और श्रुतलेख पर बल देना।
- कक्षा के विद्यार्थी–समूहों के मध्य विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन करना।
- स्फोरक पत्रों के माध्यम से संस्कृत वाक्यों का ज्ञान करवाना।
- श्लोकोच्चारण, अंत्याक्षरी आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन करना।

n';&J0; lk/ku

संस्कृत अध्ययन–अध्यापन को प्रभावशाली बनाने के लिए निम्नलिखित दृश्य–श्रव्य साधनों का विकास एवं उपयोग किया जा सकता है।

- कैसेट
- टेपरिकार्डर
- व्याकरणिक बिन्दुओं पर आधारित चार्ट
- फलेनल बोर्ड तथा चित्र
- कथाचित्र
- चित्र आधारित वर्णन
- कार्टून–संस्कृत शीर्षक सहित
- कथा पर स्लाइड
- संगणक पर खेल कार्यक्रम

eY;kdu

मूल्यांकन सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया का एक अनिवार्य अंग है। इसलिए मूल्यांकन का प्रयोग अध्यापक द्वारा कक्षा में सतत किया जाना वांछित है, जिससे अध्यापक द्वारा अपनाए गए शिक्षण–विधि की सफलता तथा शिक्षण सामग्री की उपयुक्तता का बोध हो सके। इसके आधार पर विद्यार्थियों में भाषा कौशलों के अधिगम के परिज्ञान के अतिरिक्त सुधारात्मक शिक्षण हेतु उपयुक्त विधि एवं सामग्री का चयन किया जा सकता है। संस्कृत भाषा शिक्षण के संदर्भ में विद्यार्थियों के अधिगम का मूल्यांकन मौखिक एवं लिखित दोनों रूपों में किया जाना अनिवार्य है।

कक्षा 6 से 8 तक 60 प्रतिशत लिखित तथा 40 प्रतिशत मौखिक मूल्यांकन करना समीचीन होगा। लिखित परीक्षा के लिए पठितांश पर आधारित संस्कृत में प्रश्नोत्तर, श्लोकांशों की पूर्त्ति, अनुप्रयुक्त व्याकरण, (कर्त्ता–क्रिया अन्विति, विशेषण–विशेष्य अन्विति, धातुरूपों का वाक्यों में प्रयोग, प्रयुक्त क्रिया पदों का लकार परिवर्तन, अव्यय, प्रत्यय) तथा अपठितांश पर प्रश्नोत्तर, रचनात्मक लेखन, चित्राधारित कथा–लेखन एवं पत्र–लेखन आदि विधाओं को अपनाया जा सकता है।

ekf[kd ijh{kk

श्रवण–भाषण तथा वाचन की परीक्षा के लिए छठी से आठवीं कक्षा तक के लिए मौखिक परीक्षा का आयोजन आवश्यक है। मौखिक परीक्षा के लिए छठी कक्षा से आठवीं कक्षा के लिए 40 प्रतिशत अंक निर्धारित हैं। इसके लिए संस्कृत में आदेश निर्देश के वाक्यों द्वारा अपेक्षित क्रियाएँ करवाना, पठितांश का मौखिक वाचन करवाना, पठितांश पर सरल मौखिक प्रश्नोत्तर, कथा सुनाना तथा श्लोकों को कण्ठस्थ करके सुनाना आदि विधाएँ अपनायी जा सकती हैं।